जैन धर्म में सत्कार्यवाद

अनुसंधानकर्त्री –

अदीबा नाज

संस्कृत विभाग, सनातन धर्म महाविद्यालय, मुज़फ्फरनगर

'सत्–असत्' सत् का अर्थ है विद्यमान अर्थात् निरन्तर बना रहने वाला असत् का अर्थ है जो निरन्तर न रहे अर्थात् जिसकी कहीं भी कभी भी उत्पत्ति हो जाए। सत्–असत् उभय रूप हैं या अनुभय रूप? सत्कार्यवाद अर्थात् सभी कार्य अपने कारण रूप में अवश्य सत् हैं। जिसका कारण नहीं उसकी उत्पत्ति नहीं और जो अपने कारणरूप में विद्यमान हैं परन्तु अभी फलित नहीं हुआ है तो यह आवश्यक नहीं कि अवश्य ही फलित होगा। फलित हो भी सकता है और नहीं भी। परन्तु जिस कार्य की सिद्धि हो चुकी है उसका कारण अवश्य होगा यही सत्कार्यवाद है। बिना कारण के अस्तित्व की कल्पना असम्भव है।

सत्कार्यवाद के विभिन्न दृष्टिकोण :

दृष्टिगोचर कार्य को देखकर उसके कारण का अनुमान होता है। क्योंकि कारण के बिना कार्य फलित नहीं होता। यह धारणा सभी धर्मों, मतों या दर्शनों द्वारा मान्य ब्रह्म, परमाणु, प्रकृति आदि कुछ भी हो सकती है। जिस प्रकार जैन धर्म कर्मवाद के लिए प्रसिद्ध है उसी प्रकार सत्कार्यवाद सांख्य के लिए।

सांख्य दर्शन में सत्कार्यवादः

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत् कार्यम्।।

इस कारिका में कार्य को उसके कारण में सिद्ध करने के 5 हेतु दिए गए हैं।(1) असदकरणात्– जो पदार्थ अविद्यमान है उसे उसके विद्यमान स्वरूप में लाना असंभव है।(2) उपादान ग्रहणात् कार्य का अपने उपादान कारण (मिट्टी) से संबंध होता है। (3) सर्वसम्भवाभावात् (घडे) सभी कारणों से सभी कार्य नहीं हो सकते। कोई भी संबंध दो सत् पदार्थों में हो सकता है।(4) शक्तस्य–शक्यकरणात्– जिसमें उस कार्य को उत्पन्न करने की सामर्थ्य है वही उसको उत्पन्न कर सकता है। यदि ऐसा न हो तो बालुका से तेल प्राप्त हो सकता है जो असंभव है।
(5) कारणाभावात्–कार्य कारणात्मक होता है, उससे भिन्न नहीं [1]

बौद्धों के मत में– असत् से सत् उत्पन्न होता है।

नैयायिकों के मत में– सत् से असत् की उत्पत्ति होती है।
वेदांत के मत में– सत् से विवर्त उत्पन्न होता है।
सांख्य के मत में– सत् से सत् उत्पन्न होता है।
जैन दर्शन के मत में– सत्–असत् कुछ भी हो सकता है। [2]

बौद्धदर्शन में सत्कार्यवाद–

बौद्ध दर्शन में सत्कार्यवाद– 'यत्सत् तत्क्षणिकम्' प्रत्येक सत् पदार्थ क्षणिक है। सत् पदार्थ वह है जो कुछ करे, जिसमें क्रिया हो अर्थ क्रिया कारिता सत्वम् जिसमें क्रिया नहीं वह सत् नहीं। सत् पदार्थ प्रतिक्षण अपने कार्यों को उत्पन्न करता रहे। अर्थात् सभी कार्य अपनी उत्पत्ति से पूर्व कारण रूप में विद्यमान तो रहते हैं परन्तु अपने कार्य रूप में क्षणिक होते हैं।[3] न्यायदर्शन में सत्कार्यवाद– कारण सत् होता है और कार्य असत्। सत् से असत् की उत्पत्ति होती हैं इनको भी हम सत्कारणवादी कह सकते हैं।[4] उत्पाद व्ययदर्शनात् ।।49।। (393) वस्तु का रूप पहले प्रकट में नहीं आया। उत्पत्ति के अनन्तर कालान्तर में प्रदत्त वस्तु का विनाश देखा जाता है। उत्पत्ति से पहले कार्य की असत्ता होती है।[5] परन्तु बुद्धि से उस असत् की सत्ता रहती है बात वही है परंतु एक बुद्धि द्वारा उस कार्य की सत्ता को स्वीकार किया

है।[6] शंकराचार्य ने वेदांत–भाष्य में सत्कार्यवाद का निरूपण किया है– यदि घट को उत्पत्ति से पहले असत् मानेंगे तो घटोत्पत्ति बिना कर्ता वाली हो जाएगी।[7] बृहदारण्यक–भाष्य में भी शकंराचार्य ने सत्कार्यवाद को निरूपित किया है– जब एक कार्य उत्पन्न होता है तब दूसरे कार्यों का निरोधन होता है। एक कारण में अनेक कार्य अव्यक्त रूप से रहते हैं। अभिव्यक्त होने वाले कार्य दूसरे कार्यों को आच्छादित कर देते हैं। जब तक मिट्टी की अभिव्यक्ति नहीं होती तब तक घट मिट्टी के अवयव में रहता है परंतु उसके स्वरूप पर आवरण चढ़ा रहता है।[8] नासतोडदृष्टत्वात् ।।26।। असत् से सत् की उपलब्धि नहीं देखी जाती। जिस कार्य का अपने कारण रूप में अभाव होगा उसकी उत्पत्ति असम्भव है।[9] नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः। असत् की सत्ता नहीं है। जो सत् वस्तु है, उसका अभाव नहीं। पहले क्षण में वस्तु जैसी होती है दूसरे क्षण में वह वैसी नहीं रहती असत् वस्तु का तत्त्व भी सत् है और सत् वस्तु का तत्त्व भी सत् है। इन दोनों का तत्त्व एक सत् ही है।[10] इसी प्रकार वेदांती सब कुछ सत् ही बताते हैं। कारण और कार्य दोनों सत् ही हैं। शंकराचार्य ने ब्रह्य को सत् बताया तथा उससे उत्पन्न होने वाले सभी कार्य सत् हैं।[11] वेदांत सत्कार्यवाद के दो रूप स्वीकार करता है। परिणामावाद ओर विवर्तवाद। यद्यपि वेदान्त सत्कार्यवाद को अंगीकार करते हैं परिणामवाद और विवर्तवाद के रूप में।[12]

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति
यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व तद्ब्रह्य 3/1

इस मंत्रा मे ंतो स्थिति–उत्पत्ति – प्रलय सभी का कारण ब्रह्य में निहित है। इसमें कारण का स्पष्टीकरण तीन शब्दों में कहकर कर दिया।[13]

जैन धर्म में सत्कार्यवाद–

जैन धर्म में सत्कार्यवाद को स्वीकृत किया गया है। इस पृथ्वीतल पर कारण के बिना कार्य फलित नहीं होता।[14] जैन दर्शन के अनुसार प्रत्येक पदार्थ में सत् और असत् दोनों ही अंशतः विद्यमान रहते हैं। जैन दर्शन ने इसलिए स्थिर कर दिया– 'उत्पादव्यय ध्रौव्य युक्तं सत्' किसी वस्तु का नाश अर्थात् व्यय और नए रूप को ग्रहण करना और साथ ही साथ उसके सामान्य उपादान इन सभी का साक्षात्कार हमें हो जाता है। इसी ज्ञान के आधार पर जैन दर्शन उत्पाद, नाश, ध्रौव्य (नित्यता) से युक्त पदार्थ को सत् मानता है। इसके अतिरिक्त जो भी है वह असत् है।[15] संसार की प्रत्येक वस्तु अनंत धर्मों वाली है।[16] स्याद्वाद जैन दर्शन की महत्वपूर्ण देन है। एक दृष्टिकोण से जो वस्तु सत् मालूम होती है वही दूसरे दृष्टिकोण से असत् हो सकती है। स्यादवाद के स्वरूप को जैन–विचाकर सात वाक्यों से समझाते हैं। जिसे 'सप्तभंगी' कहते हैं।

(1) स्यादस्ति (शायद है) (2) स्यान्नास्ति (शायद नहीं है) (3) स्यादस्ति नास्ति (शायद है और नहीं है) (4) स्याद वक्तव्यः (शायद अवक्तव्य है) (5) स्यादस्ति चावक्तव्यः (शायद है और अवक्तव्य है) (6) स्यान्नास्ति चावक्तव्यः (शायद नहीं है और अवक्तव्य है) (7) स्यादस्ति च नास्ति चावक्तव्य (शायद है, नहीं है और अवक्तव्य है)। संसार की प्रत्येक वस्तु को सत् असत् माना है। स्यादवाद को (शायदवाद) तथा अंग्रेजी में 'प्रोबेबिलिज्म' कह सकते हैं। स्याद्वाद से ही संबद्ध जैनियों का 'नय–वाद' या नय सिद्धान्त है। नय दो प्रकार का है प्रमाण और नय। जो वस्तु जैसी है उसे उसी रूप में देखना 'प्रमाण' है तथा वस्तु को एकतरफा रूप में देखना 'नय' सिद्धान्त है।

जैन दर्शन में सत्–असत् को इस प्रकार वर्णित किया गया है कि एक वस्तु को अनेक दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है।[17]

(1) सांख्यकारिका कारिका–9 पृष्ठ सं0–60
(2) सर्वदर्शनसंग्रह– पृष्ठ सं0 121, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
(3) दर्शनशास्त्रा का इतिहास– पृष्ठ सं0–189 हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
(4) दर्शनशास्त्रा का इतिहास– पृष्ठ सं0–233 हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
(5) न्यायदर्शन– पृष्ठ सं0–425 विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द 4408, नई सड़क, दिल्ली
(6) न्यायदर्शन– पृष्ठ सं0–426 (1/50) विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द 4408, नई सड़क, दिल्ली
(7) वेदांत–भाष्य सूत्रा सं0– 2/1/18
(8) दशोपनिषत्– पृष्ठ सं0–613
(9) ब्रह्मसूत्रा– पृष्ठ सं0–433 2/2 विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द 4408, नई सड़क, दिल्ली

(10) गीता– 2/16 पृष्ठ सं0–44 गीताप्रेस, गोरखपुर
(11) विवेक चूडामणि श्लोक सं0– 232, दर्शनशास्त्रा का इतिहास
(12) वेदांतसार
(13) तैत्तिरीयोपनिषद्– 3/1
(14) धन्यकुमार चरितम् श्लोक सं0 71, पृष्ठ सं0–29 आचार्य शिवसागर दिगम्बर जैनग्रंथमाला शान्तिवीर नगर।
(15) भारतीय दर्शन– पृष्ठ सं0–86 साहित्य भण्डार, मेरठ
(16) स्यादवादमंजरी– पृष्ठ सं0–169
(17) दर्शनशास्त्रा का इतिहास– पृष्ठ सं0–134...138